Original Article
ISSN (Online): 2350-0530
ISSN (Print): 2394-3629

International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
January 2025 13(1), 168–179

TO STUDY THE EFFECTS OF MASS MEDIA AS AN EFFECTIVE FACTOR OF EDUCATION

शिक्षा के प्रभावी कारक के रूप में जनसंचार साधन के प्रभावों का अध्ययन

Reena Bharati [1], Dr. Jarrar Ahmad [2]

[1] Research Scholar, Department of Education, Shibli National College, Azamgarh, Uttar Pradesh, India
[2] Assistant Professor, Department of Education, Shibli National College, Azamgarh, Uttar Pradesh, India

ABSTRACT

English: Mass media, or mass media, is playing a very important role in the field of education in today's modern society. These media are not only important in disseminating information but they also influence people's attitudes, behavior, and level of knowledge. Mass media such as television, radio, Internet, newspapers, and magazines play a major role in disseminating knowledge and information. Through these media, education can be delivered to a wide audience. For example, educational television programs or online courses can benefit millions of students around the world. Open Educational Resources (OERs) available through the Internet have made the flow of knowledge even more accessible, allowing students to access high-quality content on a variety of subjects. Mass media has also greatly expanded the reach of education. Education through television, such as Doordarshan's 'Vidya' channels in India, is spreading education even in rural and backward areas. In addition, the Internet has popularized online education, allowing students to continue their studies from any location. Especially during the COVID-19 pandemic, online learning became the only option and mass media played a significant role in this. Mass media has also improved the quality of education. High-quality educational programs, documentaries, and educational podcasts have provided diverse and interesting learning materials for students. These resources enhance the cognitive abilities of students and make them more enthusiastic about their studies. In addition, online seminars and webinars conducted by experts have given students the opportunity to gain in-depth and up-to-date knowledge.

Hindi: जनसंचार साधन, या मास मीडिया, आज के आधुनिक समाज में शिक्षा के क्षेत्र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये साधन न केवल जानकारी के प्रसार में महत्वपूर्ण हैं बल्कि वे लोगों के दृष्टिकोण, व्यवहार और ज्ञान के स्तर को भी प्रभावित करते हैं। जनसंचार साधन जैसे कि टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट, समाचार पत्र, और पत्रिकाएं, ज्ञान और जानकारी के प्रसार में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इन माध्यमों के माध्यम से शिक्षा को एक विस्तृत दर्शक वर्ग तक पहुँचाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम या ऑनलाइन कोर्स दुनिया भर के लाखों छात्रों को लाभान्वित कर सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (OER) ने ज्ञान के प्रवाह को और भी अधिक सुलभ बना दिया है, जिससे विद्यार्थी विभिन्न विषयों पर उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। जनसंचार साधन ने शिक्षा की पहुँच को व्यापक रूप से बढ़ावा दिया है। दूरदर्शन के माध्यम से शिक्षा, जैसे कि भारत में दूरदर्शन के श्विद्याश् चैनल, ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में भी शिक्षा का प्रसार कर रहे हैं। इसके अलावा, इंटरनेट ने ऑनलाइन शिक्षा को लोकप्रिय बना दिया है, जिससे विद्यार्थी किसी भी स्थान से अपनी पढ़ाई जारी रख सकते हैं। विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान, ऑनलाइन शिक्षण एकमात्र विकल्प बन गया और इसमें जनसंचार साधनों का अहम योगदान रहा। जनसंचार साधनों ने शिक्षा की गुणवत्ता में भी सुधार किया है। उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक कार्यक्रम, वृत्तचित्र, और शैक्षिक पॉडकास्ट ने विद्यार्थियों के लिए विविध और रोचक शिक्षण सामग्री प्रदान की है। ये संसाधन विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ाते हैं और उन्हें अपने अध्ययन के प्रति अधिक उत्साहित करते हैं। इसके अलावा, विशेषज्ञों द्वारा संचालित ऑनलाइन सेमिनार और वेबिनार ने छात्रों को गहन और अद्यतित ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दिया है।

Received 07 November 2024
Accepted 08 December 2024
Published 31 January 2025

DOI
10.29121/granthaalayah.v13.i1.2025.6323

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2025 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

Keywords: Effective Factors of Education, Mass Media, Modern Society, Educational Television Programs, शिक्षा के प्रभावी कारक, जनसंचार साधन, आधुनिक समाज, शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम

1. प्रस्तावना

प्रभावशाली शिक्षा एवं शिक्षण के लिये माध्यम की आवश्यकता होती है। सामान्यतः शैक्षिक सम्प्रेषण के भौतिक साधनों को जनसंचार कहा जाता है; जैसे-पुस्तकें, छपी हुई सामग्री, कम्प्यूटर, स्लाइड, टेप, फिल्म एवं रेडियो आदि। जनसंचार साधनों के द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है तथा नवीन ज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाता है। जब सम्प्रेषण व्यक्तियों में आमने-सामने होता है तो हम इन्द्रियों का प्रयोग करते हैं तथा सम्प्रेषणकर्ता को तुरन्त पृष्ठपोषण मिल जाता है। दृश्य-श्रव्य शिक्षण साधन व्यक्ति के सम्प्रेषण का आधार हैं। जब सम्प्रेषण किसी जनसंचार माध्यम और व्यक्ति के बीच होता है तो हम उसे मास मीडिया (Mass Media) कहते हैं अर्थात् वह सम्प्रेषण साधन, जिसमें व्यक्ति की अनुपस्थिति में छपी हुई सामग्री, रेडियो अथवा दृश्य-श्रव्य सामग्री (दूरदर्शन) द्वारा सम्प्रेषण होता है जनसंचार कहलाते हैं। इन साधनों के माध्यम से एक समय मे अनगिनत (Uncounted) व्यक्तियों के साथ एक तरफा सम्प्रेषण होता है अर्थात् सम्प्रेषणकर्ता को पृष्ठ-पोषण प्राप्त नहीं होता।

2. शैक्षिक रेडियो (Educational Radio)

आधुनिक संचार के सभी माध्यमों में रेडियो सर्व-सुलभ माध्यम है। भारत में 99 प्रति. से अधिक जनसंख्या में यह माध्यम अपनी पहुँच रखता है। इटली निवासी जीमारकोनी ने 19 वीं शताब्दी में इसका आविष्कार किया था। यह रेडियो विद्युत चुम्बकत्व के सिद्धान्त पर कार्य करता है। रेडियो वर्तमान समय में जनसंचार का सबसे मितव्ययी साधन है, इस कारण यह विभिन्न आयु वर्गों तथा दूर-दराज के क्षेत्र में अपनी पहुँच रखता है। इसकी सर्व-सुलभता तथा उपयोगिता को देखते हुए शैक्षिक उद्देश्यों के लिये इसका अधिक प्रयोग हो रहा है। रेडियो के प्रयोग से एक कुशल तथा प्रभावशाली शिक्षक को बहुत अधिक व्यक्ति अथवा विद्यार्थी एक साथ श्रवण तथा मनन कर सकत े हैं, जबकि कक्षागत शिक्षण में कुछ 40-60 छात्र ही लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त रेडियो के माध्यम से कार्यक्रम का प्रसारण रुचिकर लगता है क्योंकि इसका प्रसारण अनुभवी व्यक्तियों की सहायता से किया जाता है। इस प्रकार रेडियो के माध्यम से अनुदेशन प्रदान करने से विद्यार्थी में अधिगम के प्रति एक नवीन उत्साह उत्पन्न होता है। रेडियो प्रसारण के माध्यम से विद्यार्थी में शब्दों के प्रयोग, एकाग्रता, सूक्ष्मता से श्रवण करना तथा उत्साही वार्तालाप में वृद्धि होती है। अतः इसे औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों ही प्रकार की शिक्षा के विकास के लिये प्रयोग किया जाता है। रेडियो के माध्यम से विद्यार्थियों तथा विद्यालय के साथ-साथ अन्य व्यक्ति भी जैसे-सामाजिक कार्यकर्ता, वरिष्ठ नागरिक, स्वस्थ कर्मी, अशिक्षित तथा महिलाएँ इत्यादि लाभान्वित होते हैं। रेडियो कार्यक्रमों से शैक्षिक अवसरों की स्थापना एवं उनके विस्तार में सहायता प्राप्त होती है। इन सभी कारणों से भारत में भी शैक्षिक रेडियो का उपयोग हो रहा है।

3. शैक्षिक दूरदर्शन (Educational Television)

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में सूचना माध्यमों ने निःसन्देह मानव तथा मानव के जीवन को पूर्णरूप से परिवर्तित कर दिया। इस परिवर्तन में सबसे अधिक योगदान संचार माध्यम; जैसे-दूरसंचार सेवाओं तथा दूरदर्शन सेवाओं के कारण सम्भव हुआ। इस समय काल में इन तकनीकी सेवाओं ने इतनी प्रगति की है। सम्पूर्ण विश्व एक वैश्विक ग्राम के रूप में ही परिवर्तित हो गया है। अब मानव के लिये दूरियों (क्पेजंदबमे) का कोई अधिक महत्त्व नहीं रह गया है। यदि व्यक्ति विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में जाये तो वह कुछ ही घण्टों से पहुँच सकता है तथा यदि वह विश्व के किसी भी अन्य भाग में उपस्थित अपने मित्र अथवा सम्बन्धी से वार्तालाप करना चाहे तो वह ऐसा पलक झपकते ही कर सकता है। अतः यह कहना तनिक भी अनुचित नहीं होगा कि आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों ने मानव के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन उत्पन्न कर दिया है। जब मानवीय जीवन का प्रत्येक पक्ष आधुनिक संचार माध्यम से सकारात्मक रूप से प्रभावित है तो शिक्षा का क्षेत्र इससे कैसे अप्रभावित रह सकता है? वर्तमान

समय में शिक्षा के क्षेत्र में दूरदर्शन अपना पूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है। दूरदर्शन को शैक्षिक कार्यक्षेत्र में कार्य करने के कारण शैक्षिक दूरदर्शन भी कहा जाता है। वस्तुतः शैक्षिक दरू दर्शन एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके अन्तर्गत एक केन्द्रीय अभिकरण के द्वारा निर्मित कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न पाठ्य वस्तुओं से सम्बन्धित अधिगम सामग्री प्रस्तुत तथा प्रसारित की जाती है। दूरदर्शन शैक्षिक प्रसारणों के लिये एक महत्त्वपूर्ण तथा प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हो चुका है क्योंकि इसमें जनशिक्षा के क्षेत्र की अधिकांश बाधाओं का समाधान प्रदान करने की क्षमता है। अब तो टी.वीचैनल पर शिक्षा सम्बन्धी सीधा प्रसारण दिखाया जाने लगा है। प्रायः औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों ही प्रकार की शिक्षा दूरदर्शन के माध्यम से प्रदान की जा सकती है। इसके प्रयोग से सम्पूर्ण देश अथवा विश्व को एक कक्षा के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है तथा एक व्यक्ति अपने निवास स्थान पर ही कक्षा में अध्ययनं का अनुभव प्राप्त कर सकता है। दूरदर्शन, शिक्षा के लिये तो एक वरदान सिद्ध हुआ है क्योंकि इसने का निर्वहन किया है। इस प्रणाली की अनेक सीमाओं को पार करके इसे अधिक प्रभावी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

4. बहु-माध्यमीय शैक्षिक कार्यक्रम एवं इसका कक्षा में उपयोग (Multi and Media Educational Programmes and Its Use in Class)

मल्टी-मीडिया एक तकनीक है जो वर्तमान में आधुनिक कम्प्यूटर का एक आवश्यक अंग बन चुका है। पूर्व में मल्टी-मीडिया का अर्थ संचार के विभिन्न साधनों के मिले-जुले स्वरूप से लगाया जाता था, किन्तु सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इस शब्द का अर्थ एक ही कम्प्यूटर पर टेक्स्ट, ग्राफिक्स, एमीनेशन, आडियो, वीडियो इत्यादि सुविधाओं के प्राप्त होने से लगाया जाता है। मल्टी-मीडिया तकनीक से युक्त कम्प्यूटरों पर टेलीविजन के कार्यक्रम ऑनलाइन भी देखे जा सकते हैं तथा संगीत भी सुना जा सकता है। सी. डी. लगाकर विभिन्न विषयों की जानकारी ली जा सकती है एवं उन्हें तुरन्त सुरक्षित भी किया जा सकता है। आम व्यक्तिगत कम्प्यटू रों की तुलना में मल्टी-मीडिया कम्प्यूटरों में ध्वनि ब्लास्टर कार्ड, स्पीकर, माइक्रोफोन एवं काम्पैक्ट डिस्क ड्राइव सम्मिलित हैं। जिन्हें संयुक्त रूप से मल्टी-मीडिया किट कहा जाता है। मल्टी-मीडिया कम्प्यूटर मे सॉफ्टवेयर के रूप में मल्टी-मीडिया प्रोग्राम का प्रयोग किया जाता है, जिसे सी. डी. रोम कहा जाता है। उत्पादन सूचना मनोरजं न शिक्षा तथा सृजनात्मक कार्यों में मल्टी-मीडिया का अत्यधिक उपयोग है। मल्टी-मीडिया प्रोग्राम दो प्रकार के हो सकते हैं। लीनियर एवं इण्टरएक्टिव प्रोग्रामों मे ं विषय की प्रस्तुति एक बँधे बँधाये रूप में होती है। इस में उपभोक्ता का कोई हस्तक्षेप नहीं होता, जबकि इण्टरएक्टिव प्रोग्रामों में उपभोक्ता हस्तक्षेप कर सकता है। मल्टी-मीडिया की डिजिटल तकनीक ने शिक्षा एवं मनोरंजन के क्षेत्र में अत्यधिक क्रान्ति पैदा कर रखी है। फिल्मों तथा विज्ञापन फिल्मों में काल्पनिक दृश्यों को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया जाना आज मल्टी-मीडिया के कारण ही सम्भव हुआ है। बहुचर्चित फिल्म (जुरासिक पार्क) के अधिकांश दृश्य इसी तकनीक द्वारा तैयार किये गये हैं। शिक्षा में कम्प्यूटर का ज्ञान बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। आपको किसी भी विषय पर शिक्षण सामग्री गूगल पर सर्च कर तुरन्त उपलब्ध हो जाती है एवं कम्प्यूटर द्वारा स्मार्ट क्लास का संचालन भी होने लगा है जिससे बालक में पढ़ाई के साथ-साथ उत्साह का भी संचार होता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि वर्तमान समय में संचार साधनों के प्रयोग के द्वारा कक्षा शिक्षण का कार्यक्रम तैयार किया जाता है। प्राथमिक स्तर पर अनके प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रम तैयार किये जाते हैं जिन में छात्रों का मनोरंजन भी होता है तथा उनको ज्ञान भी प्राप्त होता है। उदाहरणार्थ, विज्ञान विषय के ज्ञान में परिवेशीय स्वच्छता एवं व्यक्तिगत स्वच्छता सम्बन्धी किसी कार्यक्रम का प्रसारण किया जा रहा है। छात्र उस कार्यक्रम को देख रहे हैं तथा सुन रहे हैं, इसमे अपनी शंकाओं का समाधान भी वह फोन लाइन के माध्यम से कार्य क्रम के बीच-बीच में प्रश्न पूछकर कर सकते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था से छात्रों को परिवेशीय एवं शारीरिक स्वच्छता को ज्ञान सम्भव हो जाता है। इसी प्रकार के अनेक कार्यक्रम ऐसे भी हैं जो कि कम्प्यूटर, दूरदर्शन एवं इण्टरनेट के माध्यम से सम्पन्न होते हैं तथा जिनका प्रयोग कक्षा-कक्ष शिक्षण में किया जा सकता है। कक्षा-कक्ष शिक्षण में इनका प्रयोग निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है-

1) इनके माध्यम से विभिन्न प्रकार के विषयों का ज्ञान सजीव रूप से कक्षा में कराया जा सकता है तथा जिन कार्यक्रमों को उपस्थित होकर छात्र नहीं देख सकता है उन कार्यक्रमों को वह इस व्यवस्था के द्वारा देख सकता है।
2) इन कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों को विभिन्न विद्वानों के विचार कक्षा-कक्ष में ही प्राप्त हो जाते हैं तथा कॉन्फ्रेन्स के माध्यम से वे अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।
3) बहुमाध्यमीय कार्यक्रमों के माध्यम से कक्षा शिक्षण को प्रभावी एवं रुचिपूर्ण बनाया जा सकता है क्योंकि ये कार्यक्रम छात्रों की रुचि एवं योग्यता को ध्यान में रखकर बनाये जाते हैं।
4) इन कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों के अधिगम स्तर को उच्च बनाया जा सकता है क्योंकि इस में विषयवस्तु का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया जाता है।
5) बहुमाध्यमीय शैक्षिक कार्यक्रमों में संचार साधनों का प्रयोग सम्भव होता है जिससे छात्रों की इन कार्यक्रमों के प्रति विशेष रुचि होती है जिससे कक्षा शिक्षण प्रभावी रूप से सम्पन्न होता है।
6) बहुमाध्यमीय कार्यक्रम में शिक्षण सूत्रों का ध्यान रखा जाता है। ये कार्यक्रम विषयवस्तु को सरल से कठिन की ओर तथा सामान्य से विशिष्ट की ओर शिक्षण सूत्रों का ध्यान रखते हुए प्रस्तुत किये जाते हैं।

5. भारत में शिक्षा में जनसंचार की भूमिका

वर्तमान विश्व दो सामान्य समस्याओं का सामना कर रहा है - सूचना विस्फोट और जनसंख्या विस्फोट। सूचना विस्फोट का अर्थ है ज्ञान का विस्फोट। आज दुनिया भर में सूचना का क्षितिज बहुत तेजी से विस्तारित हो रहा है। दूसरी ओर, ज्ञान के विस्फोट के साथ जनसंख्या विस्फोट भी हो रहा है। जनसंख्या की वृद्धि और प्रेरणा और आकांक्षा के विभिन्न स्तरों के साथ शिक्षा के लोकत ंत्रीकरण के कारण छात्र आबादी में साल-दर-साल अत्यधिक वृद्धि हो रही है। जनसंख्या विस्फोट की समस्या विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में अधिक गंभीर है। भारत जनसंख्या और सूचना विस्फोट दोनों ही दृष्टि से गंभीर कठिनाइयों का सामना कर रहा है।

तो दो सामान्य कारकों - सूचना विस्फोट और जनसंख्या विस्फोट ने शिक्षा के लिए ग ंभीर समस्याएं पैदा कर दी हैं - अधिक चीजें सीखी जानी चाहिए और अधिक लोगों को सिखाया जाना चाहिए। आज कम समय में अधिक लोगों को अधिक शिक्षा का नारा दिया जा रहा है। इन समस्याओं को सफलतापूर्वक हल करने के लिए जनसंचार के विभिन्न माध्यमों से युक्त शैक्षिक प्रौद्योगिकी की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी के अंतर्गत इस जनसंचार माध्यम की मदद से शिक्षा के गुणात्मक सुधार और मात्रात्मक विस्तार दोनों को सुगम और तेज किया जा सकता है। इसलिए इस समस्या से निपटने के लिए जन-मीडिया हमारे बचाव में आया है।

कल की शिक्षा व्यक्तियों को रचनात्मक, सक्रिय और कुशल बनाकर अपनी भूमिका अधिक प्रभावी ढंग से निभा सकेगी। शिक्षा की सफलता केवल मनुष्यों के लिए यांत्रिक तरीकों को प्रतिस्थापित करके प्राप्त नहीं की जा सकती है, बल्कि अधिक लोगों को बेहतर और अधिक तेजी से सिखाने के लिए मानव और तकनीकी प्रगति दोनों का उपयोग करके नए पैटर्न विकसित करने से प्राप्त की जा सकती है। जनसंचार के लिए बड़ी संख्या में मीडिया हैं जैसे रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र और फिल्में आदि। पहले, उदाहरण के रूप में जनसंचार माध्यमों का केवल सीमांत और व्यक्तिगत उपयोग किया जाता था। शैक्षिक प्रक्रिया में न तो कोई सुसंगत सोच थी और न ही इन सामग्रियों का कोई वैज्ञानिक संगठन। लेिकन इनका बढ़ा हुआ उपयोग मुख्य रूप से कुछ शिक्षकों की रुचि और पहल के कारण हुआ है।

संचार माध्यम वह माध्यम है जिसके द्वारा कोई सूचना या ज्ञान हम तक पहुँचाया जाता है। यह माध्यम संदेश है, जिसका महत्व अधिक है। क्योंकि, वही जानकारी जब किसी मुद्रित पृष्ठ पर या रेडियो या टेलीविजन द्वारा टेलीफोन पर प्रसारित की जाती है तो वह अलग दिखाई देगी और हम पर पूरी तरह से अलग प्रभाव डालेगी। इसलिए किसी सूचना की प्रभावशीलता उस माध्यम पर निर्भर करती है जिसके

माध्यम से उसे प्रदान किया जाता है। इस प्रकार, जनस ंचार माध्यम न केवल संदेश हैं, बल्कि संदेश भी हैं। क्योंकि, यह संवेदी अंगों की मालिश करता है और उन्हें सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया करने के लिए उत्तेजित करता है। इसलिए, शिक्षण प्रक्रिया के एक भाग के रूप में कक्षा शिक्षण के लिए जनसंचार माध्यम बहुत महत्वपूर्ण है। इसका एकमात्र उद्देश्य विभिन्न मीडिया के उपयोग से शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया में सुधार करना है। अतः शिक्षा में जनस ंचार माध्यमों का मुख्य उद्देश्य कम शिक्षकों के साथ अधिक विद्यार्थियों को लाभ पहुँचाना या गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना है।

भारत में शिक्षा में जनसंचार की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा और जनसंचार के बीच संबंध महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये एक-दूसरे को पूरक करते हैं और सामाजिक बदलाव और सुधारने में मदद करते हैं। निम्नलिखित तरीकों से जनसंचार शिक्षा में भूमिका निभाता हैः-

शिक्षा का प्रसारः- जनसंचार के माध्यम से शिक्षा की जानकारी लोगों तक पहुँचाने का माध्यम होता है। टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट और मोबाइल ऐप्लिकेशन्स के माध्यम से विभिन्न विषयों पर शिक्षा कार्यक्रम बनाए जाते हैं, जो लोगों को नई जानकारी प्राप्त करने में मदद करते हैं।

शिक्षा सामाजिक सुधार में मददः- जनसंचार के माध्यम से शिक्षा से जुड़े मुद्दे और समस्याओं को आम लोगों तक पहुँचाने का अवसर होता है। इसके माध्यम से लोग शिक्षा के बारे में जागरूक होते हैं और शिक्षा के सुधार की मांग कर सकते हैं।

शिक्षा के संदेश पहुँचानाः- जनसंचार के जरिए सरकार और शैक्षिक संस्थानों के संदेश और योजनाएँ जनता तक पहुँचाई जा सकती हैं। इसके माध्यम से लोगों को योजनाओं के बारे मे सूचना मिलती है और उन्हें उनके लिए उपयुक्त शिक्षा या योजनाएँ मिल सकती हैं।

शिक्षा में नवाचारः- जनसंचार के माध्यम से नई शिक्षा तकनीकों, शैक्षिक टूल्स और शैक्षणिक अनुसंधान की जानकारी लोगों तक पहुँचाई जा सकती है। यह शिक्षकों और छात्रों को नवाचारिक तरीकों से पढ़ाई करने का मौका दतेा है।

शिक्षा की गुणवत्ता की निगरानीः- जनसंचार के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता पर निगरानी रखने का अवसर होता है। लोग स्कूलों और कॉलेजों की गुणवत्ता, शिक्षकों की प्रदर्शनी और शिक्षा के मानकों के बारे में सूचना प्राप्त कर सकते हैं और उनके अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं।

भाषाओं का संरक्षणः- भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, और जनसंचार के माध्यम से भाषाओं का संरक्षण और प्रचार किया जा सकता है। रेडियो, टेलीविजन, और इंटरनटे पर विभिन्न भाषाओं में शिक्षा कार्यक्रम और सामग्री उपलब्ध कराने से भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है।

सामाजिक समरसताः- जनसंचार के माध्यम से शिक्षा सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है। शिक्षा के माध्यम से लोगों को विभिन्न सामाजिक समस्याओं, जैसे कि जातिवाद, लिंग भेदभाव, और गरीबी के खिलाफ जागरूक किया जा सकता है और समरसता की दिशा में कदम उठाया जा सकता है।

6. उदेश्य

1) भावी शिक्षक-प्रशिक्षकों में अत्याधुनिक जनसंचार के माध्यमों के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्यन निम्न आधारों पर किया जायेगा -

(i) लिंग (ii) वास स्थली (iii) विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, (iv) सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के प्रति।

परिकल्पनाः-

2) भावी शिक्षक प्रशिक्षकों में अत्याधुनिक जनसंचार के माध्यमों के प्रति जागरूकता में निम्न आधारों पर सार्थक अन्तर है।

(i) लिंग (ii) वासस्थली (iii) विज्ञान-सामाजिक विज्ञान (iv) सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षक।

7. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में शोध प्रारूप एवं उसे संपादित करने हेतु प्रयुक्त कार्यविधि का वर्णन किया गया है। शोध प्रारूप निश्चित किए गए शोध-उद्देश्यों से सम्बन्धित जाँच हेतु अपनाई गई योजना और उसकी संरचना होती है। इच्छित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त होने वाली विधियों के चयन और प्रयोग से सम्बन्धित योजनाओं, कार्यविधियों, प्रक्रिया और प्रारूप के समुच्चय को शोधविधि कहते हैं। यह शोध हेतु प्रयुक्त विधियों एवं प्रारूप की वैधता को भी निश्चित करता है।

8. न्यादर्श प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श प्रविधि का उद्देश्य ''शिक्षा के प्रभावी कारक के रूप में जनसंचार साधन के प्रभावों का अध्ययन'' के न्यादर्श का चयन करना है। आजमगढ जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के ठ.म्कण् व ड.म्कण् में अध्यनरत भावी शिक्षक प्रशिक्षकों में से शोधार्थिनी द्वारा कुल 304 महिला भावी शिक्षक प्रशिक्षकों तथा पुरुष भावी शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया गया। प्राप्त शोध प्रपत्रों में से कुछ उपकरणों को महिलाओं भावी शिक्षक प्रशिक्षकों तथा पुरुष भावी शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा पूर्ण नहीं किया गया था साथ ही कुछ महिला भावी शिक्षक प्रशिक्षकों तथा पुरूष भावी शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा लापरवाही से प्रतिक्रिया किये जाने के कारण तथा गणना की सुविधा के लिये चयनित न्यादर्श के प्रत्येक वर्ग से 152 महिला भावी शिक्षक प्रशिक्षकों तथा 152 पुरूष भावी शिक्षक प्रशिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया हैं।

9. उपकरण

किसी भी शोध में परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए आवश्यक तथा तर्क संगत आँकड़ों के संकलन की आवश्यकता होती है। आँकड़ों के संग्रहण के लिए वैज्ञानिक उपकरण का चयन करना अत्यन्त आवश्यक है। किसी भी शोध में उपकरणों का चयन कुछ विशिष्टताओं पर निर्भर करता है, जैसे शोध के उद्देश्य, चरों का स्वरूप, परीक्षणों की उपलब्धता, परीक्षण के अंकन तथा व्याख्या की विधि तथा शोधार्थी की व्यक्तिगत क्षमता आदि। इन सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए हमने अपने शोध के लिए ैच्ै 26.0 सांख्यिकीय उपकरण का प्रयोग किया है।

10.सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध के आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए शोधार्थी ने सर्वाधिक उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया

1) **आवृत्ति - प्रतिशत:-** आवृत्ति - प्रतिशत गणित में किसी अनुपात को व्यक्त करने की विधि है। वर्तमान शोध में आवृत्ति - प्रतिशत का प्रयोग निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किया गया है:-

(1) भावी शिक्षक-प्रशिक्षकों में अत्याधुनिक जनसंचार के माध्यमों के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्यन निम्न आधारों पर किया जायेगा - (i) लिंग (ii) वास स्थली (iii) विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, (iv) सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के प्रति।

2) **'टी' परीक्षण:-** टी-परीक्षण दो मध्यमानों की सांख्यिकीय गणना के लिए प्रयुक्त किया जाता है। दूसरे शब्दों में, दो प्रतिदर्श मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिए टी-अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। टी-अनुपात वास्तव में दो मध्यमानों के अन्तर तथा इस अन्तर की मानक त्रुटि का अनुपात होता है। वर्तमान शोध में 'टी-अनुपात' की गणना निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए की गयी है:-

(1) भावी शिक्षक-प्रशिक्षकों में अत्याधुनिक जनसंचार के माध्यमों के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्यन निम्न आधारों पर किया जायेगा - (i) लिंग (ii) वास स्थली (iii) विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, (iv) सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के प्रति।

11.डेटा का विश्लेषण और विवेचन

"इस खंड में परिणाम प्राप्त किया गया है। सर्वेक्षण के परिणामों के गहन विवरण की व्याख्या की गई है" । ग्राफ की मदद से, यह आवृत्ति और प्रतिशत तालिका का गहन विश्लेषण प्रदान करता है।

तालिका 1

तालिका 1 उत्तरदाताओं का लिंगवार वितरण

लिंगवार	आवृत्ति	प्रतिशत
पुरुष	152	50.0
महिला	152	50.0
कुल	304	100.0

ग्राफ 1

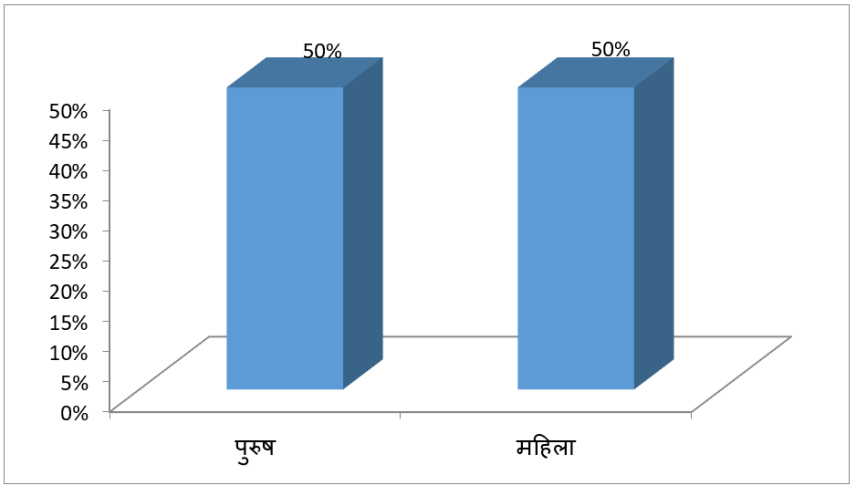

ग्राफ 1 उत्तरदाताओं का लिंगवार वितरण

तालिका 1 और ग्राफ 1 में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार, भावी शिक्षक-प्रशिक्षकों में अत्याधुनिक जनसंचार के प्रति जागरूकता और व्यवहारिक प्रयोग के अध्ययन में उत्तरदाताओं का लिंगवार वितरण समान रूप से संतुलित है। पुरुष और महिला उत्तरदाताओं की भागीदारी प्रत्येक 50 प्रतिशत है, जो अध्ययन में लिंग संतुलन को दर्शाता है। यह संतुलित वितरण यह सुनिश्चित करता है कि अध्ययन में दोनों लिंगों के विचार, दृष्टिकोण और व्यवहारों का निष्पक्ष विश्लेषण किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अत्याधुनिक जनसंचार के प्रति जागरूकता और व्यवहारिक प्रयोग के मामले में पुरुष और महिला प्रशिक्षु शिक्षकों को समान रूप से महत्व दिया गया है।

तालिका 2

तालिका 2 उत्तरदाताओं का वासस्थली के आधार पर वितरण

वासस्थली	आवृत्ति	प्रतिशत
शहरी	152	50-0
ग्रामीण	152	50-0

कुल	304	100-0

ग्राफ 2

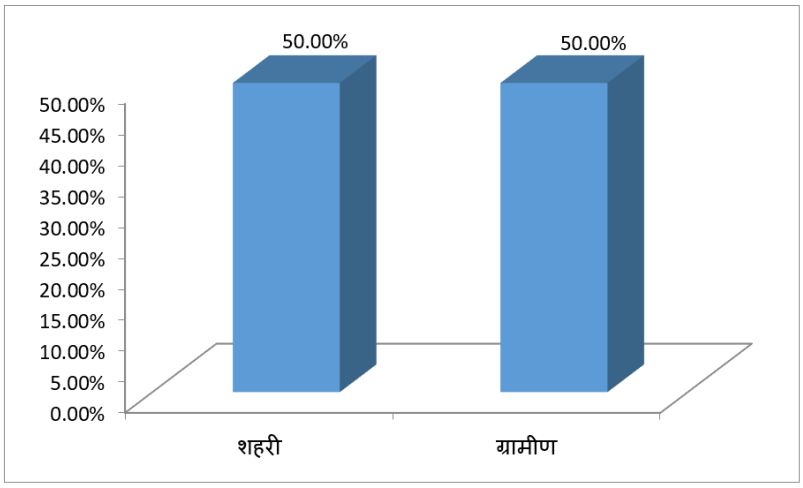

ग्राफ 2 उत्तरदाताओं का वासस्थली के आधार पर वितरण

तालिका 2 और ग्राफ 2 में उत्तरदाताओं का वासस्थली के आधार पर वितरण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से समान प्रतिशत (50.0 प्रतिशत) में उत्तरदाता शामिल हैं। इस तालिका का विश्लेषण भावी शिक्षक-प्रशिक्षकों में अत्याधुनिक जनसंचार के प्रति जागरूकता और व्यवहारिक प्रयोग के संदर्भ में किया जा सकता है। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से समान संख्या में उत्तरदाता होने के कारण, यह वितरण इस अध्ययन के निष्कर्षों को दोनों प्रकार के परिवेशों में जनसंचार के उपयोग और प्रभाव को समान रूप से दर्शाने में सक्षम बनाता है।

शहरी क्षेत्रों में अत्याधुनिक जनसंचार साधनों का प्रयोग और उनके प्रति जागरूकता अधिक हो सकती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह जागरूकता और प्रयोग सीमित हो सकता है। इस वितरण के माध्यम से यह पता चलता है कि दोनों क्षेत्रों के शिक्षक-प्रशिक्षकों के दृष्टिकोण और अनुभवों में भिन्नताएँ हो सकती हैं, जो इस अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने में सहायक होंगी। दोनों क्षेत्रों के उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट कर सकता है कि प्रत्येक क्षेत्र में जनसंचार के प्रति क्या जागरूकता और व्यवहारिक प्रयोग की स्थिति है, और यह शिक्षक-प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण पर किस प्रकार प्रभाव डाल सकता है।

तालिका 3

तालिका 3 उत्तरदाताओं का विषय के आधार पर वितरण

विषय	आवृत्ति	प्रतिशत
विज्ञान	152	50
सामाजिक विज्ञान	152	50
कुल	304	100

ग्राफ 3

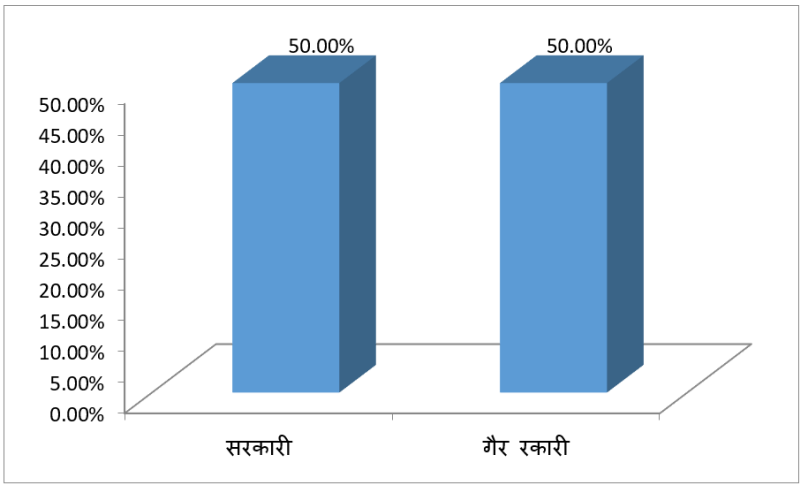

ग्राफ 3 उत्तरदाताओं का विषय के आधार पर वितरण

तालिका 3 और ग्राफ 3 में उत्तरदाताओं का वितरण उनके विषय के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इस तालिका के अनुसार, 50 प्रतिशत उत्तरदाता विज्ञान विषय से संबंधित हैं, जबकि 50 प्रतिशत उत्तरदाता सामाजिक विज्ञान विषय से संबंधित हैं।

यह वितरण भावी शिक्षक-प्रशिक्षकों में अत्याधुनिक जनसंचार के प्रति जागरूकता और व्यवहारिक प्रयोग के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, क्योंकि विभिन्न विषयों के शिक्षक-प्रशिक्षकों के दृष्टिकोण और जनसंचार के उपयोग में भिन्नताएँ हो सकती हैं। विज्ञान विषय के शिक्षक-प्रशिक्षक अक्सर तकनीकी और वैज्ञानिक साधनों का अधिक उपयोग करते हैं, जिनमें अत्याधुनिक जनसंचार उपकरण भी शामिल हो सकते हैं। इसके विपरीत, सामाजिक विज्ञान के शिक्षक-प्रशिक्षक परंपरागत और संवादात्मक विधियों पर अधिक निर्भर हो सकते हैं, लेकिन वर्तमान समय में वे भी जनसंचार के नए तरीकों को अपनाने की प्रवृत्ति दिखा सकते हैं।

समान वितरण (50 प्रतिशत विज्ञान और 50 प्रतिशत सामाजिक विज्ञान) यह सुनिश्चित करता है कि अध्ययन में दोनों प्रकार के विषयों के शिक्षक-प्रशिक्षकों के दृष्टिकोण को समान रूप से शामिल किया गया है, जिससे यह समझने में मदद मिलती है कि अत्याधुनिक जनसंचार के प्रति जागरूकता और व्यवहारिक प्रयोग में विषय विशेष के आधार पर क्या भिन्नताएँ हो सकती हैं। यह अध्ययन के निष्कर्षों को दोनों विषयों के दृष्टिकोण से समग्र रूप से देखे जाने की संभावना प्रदान करता है।

तालिका 4

तालिका 4 उत्तरदाताओं के विद्यालय का प्रकार

विद्यालय	आवृत्ति	प्रतिशत
सरकारी	152	50
गैर सरकारी	152	50
कुल	304	100

ग्राफ 4

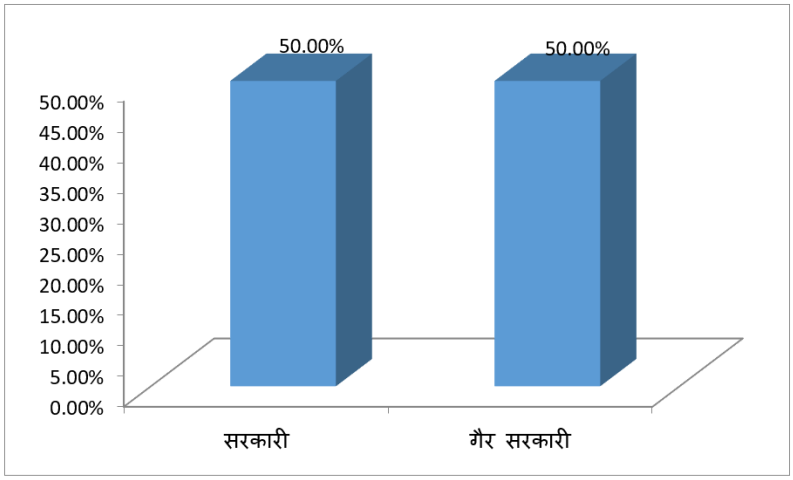

ग्राफ 4 उत्तरदाताओं के विद्यालय का प्रकार

तालिका 4 और ग्राफ 4 में उत्तरदाताओं के विद्यालय का प्रकार दिखाया गया है, जिसमें 50 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी विद्यालयों से हैं और 50 प्रतिशत उत्तरदाता गैर सरकारी विद्यालयों से हैं। यह वितरण भावी शिक्षक-प्रशिक्षकों में अत्याधुनिक जनसंचार के प्रति जागरूकता और व्यवहारिक प्रयोग के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, क्योंकि सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षा और जनसंचार के प्रति दृष्टिकोण में भिन्नताएँ हो सकती हैं।

सरकारी विद्यालयों में अत्याधुनिक जनसंचार उपकरणों और तकनीकी संसाधनों का उपयोग सीमित होता है, क्योंकि इन विद्यालयों में अक्सर बजट और संसाधनों की कमी होती है। इसके विपरीत, गैर सरकारी विद्यालयों में अधिक संसाधन और बेहतर तकनीकी साधन होते हैं, जिससे वहां के शिक्षक-प्रशिक्षक जनसंचार के नवीनतम तरीकों का अधिक प्रयोग करते हैं।

परिकल्पना 1: भावी शिक्षक प्रशिक्षकों में अत्याधुनिक जनसंचार के माध्यमों के प्रति जागरूकता में निम्न आधारों पर सार्थक अन्तर है।

(i) लिंग (ii) वासस्थली (iii) विज्ञान-सामाजिक विज्ञान (iv) सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षक।

तालिका 5

तालिका 5 भावी शिक्षक-प्रशिक्षकों में अत्याधुनिक जनसंचार के माध्यमों के प्रति जागरूकता

तुलना	समूह 1 (n)	समूह 2 (n)	Mean (Group 1)	SD (Group 1)	Mean (Group 2)	SD (Group 2)	df	टी मूल्य	परिणाम (0.05 स्तर पर महत्व)
लिंग (पुरुष / महिला)	152	152	3.45	0.65	3.80	0.72	302	2.45	महत्वपूर्ण अंतर (H_0अस्वीकार)
निवास स्थान (शहरी /ग्रामीण)	152	152	3.60	0.70	3.48	0.68	302	1.28	कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं (H_0को अस्वीकार करने में विफल)
अनुशासन (विज्ञान / सामाजिक विज्ञान)	152	152	3.95	0.55	3.50	0.60	302	3.12	महत्वपूर्ण अंतर (H_0अस्वीकार)

संस्थान का प्रकार (सरकारी /गैर.सरकारी)	152	152	3.60	0.62	3.45	0.67	302	1.89	कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं (H_0को अस्वीकार करने में विफल)

अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक-प्रशिक्षुओं में अति-आधुनिक जनसंचार उपकरणों के प्रति जागरूकता की विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों के आधार पर तुलना करके जांच करना था। सबसे पहले लिंग (पुरुष/महिला) के आधार पर तुलना की गई। जिसमे पुरुष प्रशिक्षणार्थियों को माध्य (समूह 1) मे रखा गया था, जिसका माध्य स्कोर 3.45 और (मानक विचलन 0.65) था, जबकि महिला प्रशिक्षणार्थियों को माध्य (समूह 2) मे रखा गया था, जिसका माध्य स्कोर 3.80 और (मानक विचलन 0.72) था। प्राप्त टी मान 2.45 था, जो 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया। जिसके फलस्वरूप माध्य (समूह 1) का स्कोर माध्य (समूह 2) के स्कोर से कम था। अतरू यह परिणाम पुरुष और महिला प्रशिक्षणार्थियों के बीच जागरूकता के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर को दर्शाता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि लिंग अति-आधुनिक जनसंचार उपकरणों की जागरूकता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः इस तुलना में शून्य परिकल्पना (एच$_0$) को अस्वीकार कर दिया गया।

दूसरी तुलना निवास स्थान (शहरी/ग्रामीण) के आधार पर की गई। जिसमे शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों को माध्य (समूह 1) मे रखा गया था, जिसका माध्य स्कोर 3.60 और (मानक विचलन 0.70) था, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों को माध्य (समूह 2) मे रखा गया था, जिसका माध्य स्कोर 3.48 और (मानक विचलन 0.68) था। टी मान 1.28 पाया गया, जो 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं था। जिसके फलस्वरूप माध्य (समूह 1) का स्कोर माध्य (समूह 2) के स्कोर से अधिक था। इसका अर्थ यह है कि शहरी और ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों के बीच जागरूकता के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अतः इस मामले में शून्य परिकल्पना को अस्वीकार नहीं किया गया।

तीसरी तुलना शैक्षणिक विषय (विज्ञान/सामाजिक विज्ञान) के आधार पर की गई। जिसमे विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों को माध्य (समूह 1) मे रखा गया था, जिसका माध्य जागरूकता स्कोर 3.95 और (मानक विचलन 0.55) था, जबकि सामाजिक विज्ञान के प्रशिक्षणार्थियों को माध्य (समूह 2) मे रखा गया था, जिसका माध्य स्कोर 3.50 (मानक विचलन 0.60) था। टी मान 3.12 पाया गया, जो 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण था। जिसके फलस्वरूप माध्य (समूह 1) का स्कोर माध्य (समूह 2) के स्कोर से अधिक था। जोकि यह दर्शाता है कि शैक्षणिक विषय जागरूकता को प्रभावित करता है। इसलिए, इस तुलना में शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया गया।

अंतिम तुलना संस्थान के प्रकार (सरकारी/निजी) के आधार पर की गई। जिसमे सरकारी संस्थानों के प्रशिक्षणार्थियों को माध्य (समूह 1) मे रखा गया था, जिसका माध्य स्कोर 3.60 और (मानक विचलन 0.62) था, जबकि निजी संस्थानों के प्रशिक्षणार्थियों को माध्य (समूह 2) मे रखा गया था, जिसका माध्य स्कोर 3.45 और (मानक विचलन 0.67) था। प्राप्त टी मान 1.89 था, जो 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं था। क्यूकि माध्य (समूह 1) का स्कोर माध्य (समूह 2) के स्कोर से अधिक था। इससे यह निष्कर्ष निकाला गया कि संस्थान के प्रकार के आधार पर जागरूकता स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अतः इस मामले में भी शून्य परिकल्पना को अस्वीकार नहीं किया गया।

12.निष्कर्ष

जनसंचार साधन शिक्षा के प्रभावी कारक के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे न केवल शिक्षा की पहुँच को बढ़ाते हैं बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने और समाज में जागरूकता लाने में भी सहायक होते हैं। हालांकि, इन साधनों की सीमाओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, उनका प्रभावी और जिम्मेदार उपयोग सुनिश्चित करना आवश्यक है। सही नीतियों और योजनाओं के माध्यम से जनसंचार साधनों का अधिकतम लाभ उठाकर शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक और सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता ह।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Akmaljonovic, K. J. (2022). Role of philosophy education in forming intellectual culture in future teachers. Journal of Positive School Physiology.

Department of Journalism and Communication. (2019). Mass communication: Concepts, processes and theories. Uttarakhand Open University.

Halsey, W. D. (Ed.). (n.d.). Collier's encyclopaedia with bibliography and index (Vol. 7, p. 73). Millon Educational Corporation.

Salmatov, A. A., & Mikhailov, A. A. (2022). Formation of economic and legal responsibility of the future trainer-teacher. Teoria Praktika Fizicheskuy Kultury.

Sharma, S. (2017). Mass media and Hindi. International Journal of Scientific-Innovative Research Studies, 5(4), 33–35.

Vilnilam, J. V. (1985). Education and communication. Books International.